

M. T. II. COLLEGE, SURAT

*Manuscripts Library*

No. <sup>Ref.</sup>  
Ser. 1333

Title: *Nalika Padhana*  
*Paddhati*

*Surat*



1333

In Complete

|      |   |        |   |                |   |             |
|------|---|--------|---|----------------|---|-------------|
| C    | : | Kalita | : | Archan Padhati | : | Title       |
| :    | : | :      | : | Rambhatt       | : | Author      |
| :    | : | :      | : | :              | : | Editor      |
| SK   | : | :      | : | :              | : | Year, Vols. |
| :    | : | :      | : | :              | : | Publisher   |
| 1333 | : | :      | : | Pages 1 to 26  | : | Remarks     |



श्रीगणेशायनमः॥ प्रहृष्टो जज्ञे समतर्जित देहमधृष्टोसिंदूरर  
 धृतकविनिर्जितरक्तशधृष्टो॥ व आरविंदति लज्जालि सुशोभि  
 गधृष्टो गाढो वपीनकुव भर्त्सित हस्तिमधृष्टो॥ १॥ जालिकोस  
 कललोकपालिको ~~देहकान्तिजितमेघमालिको~~ लोहितोज ३  
 लदमुंडमालिको शान्तामि कविता प्रणालि को देह कांतिजि १  
 तमेघमालिको॥ २॥ प्रत्ररधृतक हस्तिमधृष्टोसिमंतोरानत वाच  
 कोशावातंत्रा एष ने जानि कालिकाया गुरुक्तिः॥ निष्ठावपिद  
 तिस्वरूपाराम ज दे नतन्यते॥ ३॥ तत्र देवो व ताप्रेसाधकः प्राप्ति त  
 स श्री शाय स ~~विजय~~ श्रेतुरिया प्राप्ते व बध स्वस्ति कायास

रा.प.

रिक्लपयामिनमः॥ हे स्वशरीरारंजकं श्रीधुः प्राकाशतचंपु  
 ष्य बुध्याः प्रमु. वं स्वशरीरारंजकं वायुतचं धूप बुध्याः प्र  
 रं स्वशरीरारंजकं तेजस्तचं दीप बुध्याः प्रमु. वं स्वशरीरारं  
 जकं प्र नृ तचं नेत्रे धुध्याः प्र. इत्यादि॥ ऐश्री श्री हस्तर  
 प्रे हस्तक्षमलवरपुंस हस्त्रप्रे श्री प्रमु. जानंदनाथः प्र  
 मु श्री देवंपा श्री पादुकां प्र जयामि इति गुरुपादुकां  
 चंद्रशक्म प्र जय जपं गृह्येति मंत्रेण गुरु दक्ष एव जरेस  
 मप्येरे प्रखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन वराचरांत तप दंद



नः श्लेषातक करंता सनि बाभ्रक दं नबि जे नटादि कुल कुल  
 व सं प्र ए म्य स्वसिर सि श्वेत स ह स द ले कर्मि का पां॥ श्वेतं श्वेत वि  
 लेपना ल्य न स नं वा मे नर त्तो ल जं नि ॥ च स्या प्रिये तरे ए त र सा हि ॥ ३  
 प्र स न्ना नं॥ ह स्या ज्वा म स पं ग रं व द धृतं शं भुः स्वरु पं प रं ह  
 ला लोहित लो व नो ल ज पु तं ध्या वे कि र स्वं गु रं॥ अत्र गु र र  
 तैः व ए वि लेपना ल्य व स न भू ष एा दि का मार त्तं जा य नी यी॥  
 इति ध्या ध्या लं तं पं रं गं इति जी इ ज पृ र्थ कं गु र प दि ष्टि नि  
 धि ना मान स्तो प वा रैः पू जये त्॥ त द्य ध्या॥ लं च शरी रा रं न कं  
 पृ धि जी त वं गं ध बु ध्या अ मु कानं द ना ध य - - -

ऊर्ध्व

रिति ने न त स्मै श्री गुर वे नमः॥ इ प्र ए म्य प्रा तः प्र चृ ति सा यां तं  
 स्ना या दि प्रा त रं त तः॥ य क रो मि ज गं न्ना य त द स्तु त न पू ज नं॥  
 इति गुर वे नि वे च त दा शं ए ति वा तं ना रा व मु द्रो पा इ दि नि  
 सृ ज्प ना त तो म्हा ला ध्या रा कुंड लि नी हं इति स वे त नां कृ चा  
 उ ध्या प्य ब्रं ह्म रं ध्रं नी वा शि वे न सं ऽ यो ज्य त स्र जा यो कु ल  
 गु रू न्म हा रं सो ध्नो ज इ द या दू र्ण लो व ना न्॥ कु ला त्रि ग न  
 सं जि त्वा कूर्ति शेष ता म सा न् कु ल ध री ष्यैः परि वृ ता म्पू र्ण वि  
 तः कर णो पे ता न् व रा ज य पु ता न् स वा नि कु ल तं आ र्च ये दि त  
 । इति ध्या ध्या प्र क्ता नं द ना ध्या य नमः॥ स क ला नं द ना ध्या कु



मारा नंदना. नसिष्ठा नंद. ओ धानं द. सुरा नंद. ध्याना नंद. नो धो  
 नंद. मुक्ता नंद. इति ध्यावा तत्र वंद्र मंडु ला ऊलि ता म् त धार  
 या स्यै दे ह स्य दे व ताः सं त प्य त त्प्रे ज ट ल व्या षं शरी रं सं वि ष्ण  
 त तो नै व ष षा रु द य क म ल मा नी त य त त्र सा कारं स्वे ष्ठ दे  
 व ता रु पां ध्या वा म न सा सं प ज्म म् लं ज ष्या गु ह्ये ति स म प्ति  
 त्रै लो क्य वै त न्य म पि त्रि श क्ते हे वि ष्म मा र्त्त ज न दा श न ये वा  
 प्रा तः स मु ष्या य त न पि पा र्थं सं सार पा त्रा मु नि व त्र पि ष्ये इ ति  
 प्रा ष्य षु नः कु ड लि नी रु पां तां म् ला धार मा न ये त् ॥ ३ ॥ दे  
 वि ता वा न्यो स्मि न् हे म् वा हं न शो क सा क्ता स वि दा नै रू पो  
 ५

३

म मात्मा न मिति वि त ये त् ॥ त तः स मु द्र मे ख ले दे वी प र्व त स्त न म्  
 ५ ले वि ष्णु प त्ति न म स्तु न्य म् स्य र्शं क्ष म स्य मे ॥ इ ति ध्या सा नु  
 सारे ए न्मो पा दं ५ वी वि ति ति ग सा व श्य कं क र्म कृ वा दे  
 वा नी मा ल्य म प स्य सा र्थ ष्ठ व दि तो व शि ष्ठ पु ष्ये ॥ तां र्शं  
 ष्ठ ज्म प्र ए म्मा शं ग र्ति वा स्ता नं कु र्णा त् ॥ त त्र न ध्या दो ग वी म्  
 ले न म्ति क यां गं वि लि प्य स्व र्ण र ५ ज त मु द्रा रु पा न् कु शा प्र ना  
 मा त र्शं न्यो ध्ये वा स नं दे वी रु पां वि जा व्य म् ल मु व र न्म म ला  
 प क र्ष णं स्ता वा त क्ष मा ए प्र का रे एा व म्म त ल म् र्ण ता म्  
 पा त्रे ति ला धं त त्र पा पु ष्या रि नि क्षि प्य ते न सं क ल्प ये त् ॥ ३ ॥ प्र  
 ये त्मा दि ना ए त न्म त्र प्र ति नं ध व का रो म्मै त ष्ठ दुरि त ५ क्ष य



पूर्व कं श्री दक्षिण कालिप्रितये स्नानमर्हं करिष्ये तिसं  
 कल्या जले त्रिकोणं वक्त्रं जितिरव्यागं ते वयं नैवैव  
 गोदा नरी सरस्वती नर्मदे सिंधु कावेरी च जले स्मिन्  
 संनिधिं कुसा इति मंत्रेण स्तुत्यं मंडलादं कुशमुद्रया त  
 आन्या वा ह्य। प्रासंत वीय स्यात्ता विघात वा यस्या हा  
 शिव त वा य म स्यात्ता ॥ स न त र्ध चाय स्या हा ॥ इति  
 रावम्प मले नत्रिः शरीरं प्रोक्ष्य पुनर्मले न मूर्तिकया  
 गं जितिप्य मले कुं न मुद्रया त्रि मूर्ध्नि जले नातिषिंयां

न ४

गुलिजिस्त्र प्रक्षिप्राणि संसृज्य मले विघाया त्रिनिर्मज्जोन्म जा पूर्व ग दा  
 वमेदिति स्नानं ॥ अथ संध्या ततो मले न प्रोक्षिते श्रोत वा स सि परिधाय उ  
 मणिधर धाणि वृद्धिणि म हा प्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फाट् स्या हा ॥ इति शि  
 र्वां न ध्या मले ति ल कं कृचा प्रा वम्प रं ध्या दि कर ष डं ग न्या सं  
 विधाय नाम स स्ता स्यं ज लं दक्षिणे नजि अय हं चं वं लं रं बी जैस्त्रि  
 रजि सं च्या गुल्यंतर ग ल दु दु कानि दुजि म् ल म् चर न स पा धा त च म्  
 दे या म् ध्वि प्रो क्ष एं कृ चा ज ल शेषं दक्ष त स्तो नि अय ना साग्र मु  
 प नी य नाम ना स या कृष्ण दे हांत व तिस म स्तं पा जं ते न प्र धा ल्य  
 कृच्छ्रं व र्णं त जालं दक्ष ना सा पुटे न ह स्ता प्र विष्टं सिं वि पुर कल्पित व  
 ज्ञ पाषाणे उक्ताः प्रस्थाप फट् इति किं ध्या मले नतिष्ठ नूस्तया पां जलि  
 त्रयं द चा कालि का ये वि घा हे श्म शान वा सि न्यै ध्या म हि त ह्यो धो रे च वे



दयात॥ इति गायत्री मण्डोत्तर शताव ॥ एतान्तां जातयेदिति संख्या ॥ प्रथ  
 तर्पणं ॥ ब्रह्मं ब्रह्मविद्या तर्पणं देवता हि इहा यां तु इत्या वा ह्यु  
 ब्रह्म जैर वस्तु प्यतां ॥ उर्विष्णु जैर वस्तु प्यतां ॥ उरुद्र जैर वस्तु प्यतां  
 ॥ हस्त क्षेमल वरयं आनंद जैर वा य वषट् ॥ आनंद जैर वस्तु प्यतां ॥  
 सहस्र क्षेमल वरयं सुधा देवै वषट् ॥ आनंद जैर वी च प्यतां ॥ इति देव त  
 र्पणं महा देव्यं नान्य प्यता मित्रादि ॥ गुरु रु तर्पणं मे व ॥ प्रत्र र्षि  
 तर्पणं ॥ परम प्रकाशानंद वस्तु प्यतां इत्यादि ॥ प्रत्र स्व गुरु परं परात  
 र्पणं मे व पि च तर्पणं मिति र ह स्प जि दः ॥ प्र न्ये उ दे व जि जि च तर्पणं  
 विष्णवे ॥ प्र ते पूजा क्र मे एत र्पणे दिति व दंति व सि ष्ठ सिंहादि षु त  
 था द श ना त ॥ प्र पि कारि जि दे न बो ध य मिति वि ॥ ततो मू लां म

३ ते  
 हा का ल स हि ते द क्षि ए का लि के मा त स्मृ प्य ता मि ति द श आ सं त र्प्य द क्षि  
 ए का ली त्रि सं त र्प्य परि ना र दे ज ता स्ता र्प्य ये त ॥ का ली च प्य ता मि ति  
 मि त्या दि त द श तो मू लां सां गां स परि र्वा रां स वा त नां सा यु आं म हा  
 का ल स हि तां श्री द क्षि ए का लि कां त र्प्य या मि त्या इ ति सं ध्या श क्ता  
 ज पि त्रि का लं दे वी ध्या या य ध्या श क्ति मू लां गाय त्री ना ज ये त् इ ति त  
 तः हो तं सः । मा तें ड जै र वा य प्र का श श क्ति स हि ता य इ द म ह्यं स्वा हा  
 हा इ ति स्त त्रिः स्तू प्या ह्यं ह्यं द चा सूर्य मं ड जे दे वी नि जा न्य मू लं उ च दा  
 व दि त मं ड ल इ ति नो शि व वै त न्य म यि न हा का ल स हि त दि क्षि ए का लि  
 का ये इ द म ह्यं स्वा हा इ ति मंत्रे र क्त पुं षे वं द न ज पा पु षा कु रा कु रु



६

मकुशजलाक्षतपरिपुर्णतामप्रात्रेणसर्पमंडलस्यायेदेवो-  
मंदचागायत्रीमयाशक्तिप्रज्ञापुष्टोतिमंत्रेणसमर्पसर्पमंडले  
देवीविलसतिपेतुप्रपन्नानिधिः॥ यथाकामनयामस्त्रयुग्मंपरिधाज  
स्त्रीवतिलकं बंदनादिना कृष्णपूजास्तु समीपमागतम् ॥ ३ ॥  
हंफट्स्वाहाइतिमंत्रेणजलमानीय-प्रासनमस्तु दत्तउपनिषत् ॥ ३ ॥  
विष्णुसर्वपापनिशमनाशेषविकल्पानजनयत्तं फट् इति मंत्रेण ह  
स्तौपादौ प्रक्षेपात् ॥ ३ ॥ स्वाहा इत्यादिमन्त्रेण शीलांशान्मा  
विधायतेन जलेन द्वां प्रोक्ष्य द्वां देवतापूजयेत् ॥ द्वां प्रोक्ष्य जगत्  
पतये नमः ॥ कामेक्षां क्षेत्रेण जलजनमः ॥ दक्षिणे च बहुलाय नमः

६

६

प्रभः पांघोर्गिनी नमः ॥ एषेव केनेणगंगाये नमः यं मुनाये नमः ॥  
श्रीलक्ष्म्ये नमः ऐं सरस्वत्यै नमः ॥ इति पश्चिम द्वा रादि पूजां प्रादक्षिणेन वि  
धाय पुनः प्रवेशे मंडपा मध्ये पश्चिम द्वा रेण कुंभादिति ॥ तत्र नामांशं  
कोट्यं वचनं देह लो लेन यन् द क्षापा दपु रः मंतः प्रविश्य ॥ ३ ॥ अथ का  
उक्तानि जिशा वाप्रेत उल्ला का ये वा न नि व सं यं नो देव ता न नि सं  
संस्थिताः ॥ अप स पं ते न ता ये न ता न वि ता संस्थिता ॥ ये न ता वि द्वा न् न  
तरि तो न सं उ शि वा ज्ञ या ॥ ३ ॥ स व वि द्वा न् सार य हं फट् स्वा हा ॥ एजि  
रजि मं त्रि ता न क्षे त स र्प पति ता न गृ हे ॥ वि कि रे त ॥ अर्च ज ले न गृ हां  
तः प्रो क्ष्य ने श त को रो तुं वां वा स्तु पू र्वा य न मः ॥ इ शां त को रो तुं द  
प ना था य न मः ॥ ३ ॥ इति पू र हं फट् स्वा हा इति नमि परिधि मं तु प वि त्र व द्वा

सर ४



ॐ हं फट् स्वा हा इति अमि मजि नं त्र्यं प्रा. सुरे खे न डूर खे हं फट् स्वा हा  
 इति त्रि जो ए मं डलं कृ चो उं ही प्राधार शक्ति कमला स नाथ नमः॥ इति सं  
 पञ्च तत्र कं बला घासनं संस्थाप्य स्थिति का घासने नो दधु खो पविरो  
 त॥ ततो स्त्र्यं मंत्रेण वामे पादौ ध्यात ता लत्र पदिव्य दृष्ट्या व कं लो न प  
 र्कं नारा व मुद्रया दिग्बन्धनं कृ चो उं स हा स्वार हं फट् इति अमि मजि  
 कारं परि स्वात्रयं च कृ चो॥ ततो नीरुद्र मंगी कृणु वा मशिर सिंगुं गुरु  
 ष्यो नमः॥ ६ क्षशिरो जागे॥ गंग एष तये नमः॥ मध्ये श्री दक्षिण कालिका  
 ये देव तायै नमः॥ इति नन्वा स्य ६ क्ष जागे पुष्पादि कं स्व पृष्ठे कुर्जे द्रव्यं  
 आशि संस्थाप्य उं शताभि जे के शत मजि के हं फट् स्वा हा इति पुष्प म  
 ष्या य॥ उं पुष्प के नुरा जाहि तेश ता य स म्प क सं बंधाय उं पुष्पे पुष्पे

म हा पुष्पे पु सु पुष्पे पुष्प सं ज वे॥ पुष्पे व या व को र्णे हं फट् स्वा हा इति मं  
 त्रेण पुष्प उद्भि विधा य उं प्रा. हं फट् स्वा हा इति मंत्रेण काय वाक् चित शो ध  
 धनं विधा य॥ र क्ष हं फट् स्वा हा इति रुदि रु स्तं द चा आत्म र हं धा विधा  
 य रं द ना त्तानि पुष्पाणि कराभ्यां म द्धि चा तानि वाम ह स्ते स मा दा या  
 द्रा य ते ते स वे वि लयं यां तु य उ वे मां हि सं कुं हि स क्त म् गुरु रोग ज ये त्रे  
 शा य तं त्रि र्पु म स क्ते॥ इति मंत्रेण इ शां न्यां दिशि दूर तः क्षि प्रोक्त  
 मुद्भि कु र्यात्॥ यथा हं कारेण म्प ला ध्म रा कुंडलि नी उ ह्या य जीवा  
 त्म ना सं यो ज्य हं स इति मंत्रेण सो रु मि ति मंत्रे ए पर मात्म नि वि ला य ये  
 ततः प्रा दा दि ज्ञानु पयं तं स्थि तं॥ पृथिवी जी न्नी दि ना जि प र्थ न स्थि ता  
 म्हा



स्वस्ति प्रणिजाप्यताः नानादि रुद्रांतः स्थिते व ह्येत व रुद्रादि च मध्यं  
 तः स्थिते वाप्येत व मध्यं ब्रं रं ध्यांत स्थिते श्री कारोतां वा तं कारेत व म  
 हत्तवे तच्च प्रकृतौ तां व ब्रं स्मिणि नि लो प येत् ॥ ततः पुरुष नि ज्ञे प्रो गुष्ठ प्र  
 मा एं शा मं क्रुधं रक्त रम म वि लो व नं ख २ रु व र्म धरं प्र धो मुखं पा पं व  
 ॥ कु क्षौ वि विं य प मिति मी जे न जो उ श वा र मा व ते न बी जे न कुं ज क प्र यो  
 मे स स पा पं दे तं न र्मां तं सं द ह्य पु न वा म ना स या जा यु ना पू र्ण स पा पं दे  
 तं सं शो ष र मिति व त्रु ष ष्टि वा र मा व ते न बी जे न कुं ज क प्र यो गे ण स पा पं  
 दे तं न र्मां तं सं द ह्य पु न र्मां तं मी जे न द्या नि श वा र मा व ते न द क्ष ना स  
 या पा प पुरु ष न स्म रे व येत् ॥ ततो व मिति मी जे न ज्ञे ऽ पा त न ला ट वं द्रा  
 त मा नृ का व र्ण म यो म म त व ष्टि ति पा ह्य दे ही न स्म पू षा य मा नृ का न्या

स न मे णा व ज ग न नि ष्ठा य ल मिति मी जे न पा त रु ठी कृ त् पर मा त्म नः प्र  
 वृ कृ ति त स्याः म ह त वं त तो तं का रं त स्मा या का शं त तो जा युं त स्या ते जे न्मा त  
 ज्ञे नं त स्मा य पृ थि वी नि र्ज न प स्य स्य स्या ने स्या पृ थि वा ब्रं स्म रं ध्य स्य  
 पर मा त्म नः । स का शा त स्तो त मिति मं त्रे ण जी वा त्मा नं प्र दि ष ज लि का का  
 रं कुं ड लि नी द्वा रा अ द य क म ल मा नी य कुं ड लि नी मू ला धा रे स्या पृ थि  
 वा स्य शरी र स्य स म स त जि जि षं दे न ता रा भ न यो र्पं वि जा व ये त इ ति कृ त  
 मृ धिः । त तो दे वी रु द्र मा त्मा नं जि जी षं न्य रु दि ह सी द वा ॥ प्रो क्षी को  
 हं सः द क्षि ण का लि का याः द्या एा इ ह प्रा णाः ॥ जी व र ह स्थि तः स मे वि  
 पा शि १२ वा द्य नो न य न श्रो त्र द्रा ण शो प्रो इ हा ग ल सु र वं वि रं ति षं तु स्या  
 हा । इ ति वा र त्र यं प ठे दि प्रा णा प्र ति ष्ठा ॥ प्र ष मा नृ का न्या सः ॥ श्री श्री

ति







१०

ॐ ह्रीं ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ श्री कालिका ॥ नमः स योगि ॥ ॐ ह्रीं रुद्राय  
 नमः ॥ श्री शरसे स्वाहा ॥ श्री कृशिरायै स्वाहा ॥ नमः ॥ ॐ नमः श्री वायवे  
 ॥ ॐ नमः त्रयत्रयाय नमः ॥ ॐ श्री शक्तः ॥ प्रख्यापय ॥ इति मंत्रैः कृत्वा  
 ॥ प्रणुष्टादितलां तविन्यस्य पुनः रुद्रादिनेत्रोतं य कृत्वा प्रस्य मंत्रे  
 एतालत्रयं कुर्यात् ॥ पूर्वदिग्वाय कृतं वेत्तदात्र कुर्यात्ततः ॥ प्रं ॥ आं  
 इ ॥ उं ॥ प्रं ॥ प्रं ॥ लं ॥ लं ॥ रुद्रि ॥ रं ॥ प्रं ॥ प्रं ॥ प्रं ॥ प्रं ॥ कं रं गं घं दक्षिणं चतुर्गो ॥ उं ॥ वं  
 कं जं रं मं ठं टं उं ठं वासचतुर्गो ॥ एं तं थं दं थं नं थं पं ॥ जे जे दं थं पादे ॥ प्रं थं रं लं  
 थं शं थं सं थं थं थं वासपादे ॥ मथ मंत्रं नमः ॥ श्री नमः शिरसि ॥ श्री  
 नमः नेत्रयोः ॥ श्री नमः ललाटे ॥ तं नमः ॥ श्री नमः मध्ये ॥ तं नमः ॥ कर्णयोः  
 श्री नमः ॥ गंडयोः ॥ श्री नमः ॥ नदने ॥ दं नमः ॥ दं दं तं तं यो ॥ इति नमः ॥ त्रिहोत्रां ॥

१०

ह्रीं नमः स्कंधयोः ॥ कान्तमः गले ॥ इति नमः ॥ चतुर्गो ॥ को नमः ॥ रुद्रि ॥ श्री नमः पा  
 दयोः ॥ श्री नमः ॥ ॐ श्री नमः नाभौ ॥ तं नमः ॥ त्रिगो ॥ तं नमः ॥ कर्णयोः ॥ श्री नमः  
 मः ॥ रुद्रो ॥ श्री नमः ॥ करयोः ॥ स्वा नमः पादयोः ॥ तानमः स योगि ॥ ततो नवध्वसपु  
 ध्वसं वध्वसना प्रीति मूलं च चरन्त्याप कं न्यासेतदिति न्यासः ॥ प्रं न्ये उ म च  
 तव तस्य धातो द्रष्टु ॥ प्रण स्य एदि पत्रे स्यं रू कुसुम कुंड गो लो  
 रोचना गुरु केशरू सुरी कुल वंदनात्मका ॥ ॐ गं धे न त द जा वे सा मान्या  
 ॥ ॐ गं धे न नायं तं म्माय पुरतः ॥ म्मं द नादि पीठे निधाप्य प्रासाद नं कुर्यात्  
 ॥ प्राणि प्रथा ॥ कुला र्थो स्त्र एरुप्य शिला कर्म कपाला लां ॥ ॐ म्मं य  
 नाति के रं शं रं व मुक्ता मुक्ति समुद्रं ॥ पुण्य व धा समुद्रं तं पात्रं सध्वो  
 इति ते मुजां स ध्वो इति तं वक्तुं कृत्वा ॥ जगा कारे एपि उ त्तानि त द्वा न स्या



मुरुतोशेया। तत्रस्ववात्रेत्रिकोणवत्तवतुरस्त्रमंडलंकुया। उंही-प्रा  
 धारशक्तेजेनमः॥ इति संपुज्या॥ आधारे संस्थाप्य उंक्रः प्रस्थाप्य  
 ट, न इति पात्रं प्र द्या ज्या धारे निष्कय। उंक्रां रुदयाय नमः इति इजले  
 न संपुज्य गं केंजे वयमुने वै त्रैलोक्येशी मंत्रेण पूर्ववतीया न्या वाह्य।  
 उं इति गंधादिनिर्घोषिज्जानमिति भो नु मुद्रां दर्शयेदिति सामान्यार्चः॥ आ  
 लवक्तुमिधोत्रिकोणवत्तवत्कोणवतुरस्त्रमंडलं विधाय मध्योक्षी  
 त्यालिरव्यवतुरस्त्रमण्डलदिदिक्षु प्रादुर्ध्वो एषे री न उं उं उं उं उं  
 जाठाय नमः। उं जालंधरमीठा य नमः। उं पूर्यगिरिपीठा य नमः। उं व  
 मरुष पीठा य नमः। जङ्गकोरोषुः प्रज्जिकोरो उंक्रां रुदयाय नमः। इ  
 शानकोरो श्रीशिरसे स्वाहा। नैरतौ उंक्रां शिरसा ये वषवै ट्। वायो उं

श्री कैंक वयाय नमः देवताग्रकोरो उं क्रौं त्रयाय नमः। पश्चि  
 मकोरो उंक्राः प्रस्थाप्य ट, नमः इति संपुज्य त्रिकोणं मूलस्य द्रव्येण  
 अर्च्य मध्यो उंही-प्राधारशक्ते नमः इति संपुज्य तत्राधारे संस्थाप्य इति  
 सामान्योर्ध्वोदके नाचुक्षमं वद्विमंडलाय दशकलात्मने नमः इति-प्राधा  
 रं संपुज्य तत्र स्वाग्रादि प्रादुर्ध्वो एषे न-पं ध्रुमाश्चि चै नमः। रं अष्टाये नमः  
 लं जलिन्ये नमः। नं जलिन्ये। शं विस्मलिन्ये नमः। जं सुमित्रे। सं रूपाये नमः  
 हं कजिजाये। लं हव्य जाहये। धं कव्य जाहये। इति संपुज्य ट, पं इति पा  
 त्रं प्र द्या ज्या श्री दक्षिण जालि जायाः विशेषाच्च पात्रं स्थापयामिति संस्था  
 प्य-प्रं-प्रकमंडलाय दशकलात्मने नमः प्रर्क्ष जात्राय नमः। इति पा  
 त्रं संपुज्य तत्र स्वाग्रादि प्रादुर्ध्वो एषे न कं नंतजिन्ये नमः। खं मं तापिन्ये नमः। गं  
 पं ध्रुमाये नमः। पं मरीये। उं नं जलिन्ये। वं धं रूपाये। कं दं सुष्ठु म्नाये।







१३

कामकलायां देवीमानो ह्यसकलीकस्यदिग्भनकवाक्त्रीनेत्रत्रय  
 पाणयोषट् इति नेत्रमंत्रेण दिव्यद्रष्टा संकीर्णशरवमुद्रा योनिमुद्रा  
 २२ प्रयेदिति विशेषाद्यसंक्षेपः॥ अत्र ताद्रशा एव नेत्रमंत्रः न तत्रैव इति॥  
 तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति स्वरयः॥ दीवा वचकुराततं इति द्विती  
 यश्रुतिः॥ अंबकं यत्रासते सुगंधिपुष्टिबर्द्धनं म॥ उच्चैरुक्तामिव अंध  
 नाम्ना सोमदीयमावृतात् इति तृतीयश्रुतिः॥ त्रुं प्रतद्विष्णुस्त  
 वसेते वीर्येण मृगो न शीमः कुबरो गारिषाः॥ यस्योरुषु त्रिषु वित्र  
 मणेषु धिदिपं भुवि वेनानि विस्था॥ इति चतुर्थश्रुतिः॥ विष्णु यो नि क  
 ल्मयतु चण्डालपाणिपिशतुः॥ असि चतुर्ग्रापतिगर्भं दधातु ते॥ गर्भं धेति  
 सिनी वासी जिगर्भं धेति स्वरस्वतिगर्भं ते॥ प्रस्थि नौ देवा वाधतां पुष्क

१३

रस्त्रजौ॥ इयमेव गोविंदं दाव नोक्तरीत्या श्रुति समूहाः प्रमथ्या उते ल  
 भुक्त कनि वीक्त श्रुति परिजा हा वि लेति इति पंचमश्रुतिः॥ इति विशेष  
 र्घः॥ तदधः पाद्यार्घ्या व मनोमधु पक्कं स्नानीयादि पात्राणि सामांश्च वि  
 स्थापयेत्॥ दशक्तौ तावदर्थमेकमेव पात्रं स्थापयेत् तत्र त्रिकोण  
 वत चतुरस्रं कचासाधारं पात्रं निधाय शत्रुलेनाप्यविशेषाभ्यु  
 विदुदचा मलेनाष्टवारमभिमंत्रयेत् नमुद्रां प्रदसेदिति संक्षेपः  
 २३ तं तं पुरे री बंदि कायां॥ एकस्मिन् न च पात्रे पाद्यादीनि प्रकील्य  
 येत् सुधा एवेनानागंधसमाकीर्णं कुलद्रव्येण यंत्रकं लिखितं वा  
 जयेत् अशक्तौ द्रष्टव्यं न दृक्॥ अत्रानुक्तं विशेषाद्यमिति नैव क

न्या ३

२१



१५

परितो

१५

त्वमिति संक्षेपः। ततः सामान्याभ्योदकेन पूजोपकरणं वा दत्तुं यथेष्टं।  
 मारजेत॥ तत्र पीठपूजायथाऽनुपाशाशक्तये नमः प्रकृतये नमः कृ-  
 म्मयि० प्रनेताय० पृथिव्यै० सुधांश्वये नमः सर्पिः सागराय नमः॥ इत्य-  
 पि ग्रंथे क्वचित्पण्डितैः पाठ्य नमः चित्तामणिगुहाय नमः। श्मशानाय  
 पारितापय नमः। तन्मूले रत्नवेदि काये० मणिपीथठाय नमः वज्रं  
 नानामुनिभ्यो नमः नानादेवेभ्यो नमः शबेभ्यो नमः शबमुदेभ्यो नमः  
 बहूमांसास्थिमोदमानशिवाभ्यो नमः उधंधम्मनिमः पीठाग्निकोरो।  
 उं शीशानाय नमः नैऋति कोरो। उं नैवे राप्ताय नमः। वायु कोरो। उं रें-  
 चय्याय नमः। ईशान कोरो। उं प्रं प्रधम्याय नमः। पूर्व उं प्रज्ञाना-  
 य नमः दक्षिणे प्रं प्र ~~संज्ञाय नमः~~ वैरापाय नमः पश्चिमे। उं प्रं प्र

शु५

१५

१५

चं परमात्मने नमः ॥ शीशानामने नमः ॥ प्रष्टुदलेषु स्यात्प्रादि प्रादक्षिण्ये नमो० ५  
 नैऋत्याय नमः। उत्तरे मध्ये प्रानंदकाय नमः। विंशतिनालाय नमः॥  
 उं सर्वतवाय नमः। मवापद्याय नमः॥ उं प्रकृतिपत्रेभ्यो नमः॥ विकार-  
 रमय केसरेभ्यो नमः। उं च बाशद्वय कलिकायै नमः। उं प्रं प्रीतिमंद-  
 लाय नमः। उं सोममंडलाय० उं मं वल्लिमंडलाय० उं सं सचाय० रं रत्नासे-  
 उं तंतमसे० उं प्रां प्रात्मने नमः। प्रं प्रेतरात्मने नमः। उं ईशिकायै नमः  
 उं शीशानायै नमः। क्रियायै नमः॥ प्रष्टुदले कामिने नमः। कामदायिने० र-  
 त्ने० रतिप्रियायै० प्रानंदायै० मध्ये मनोत्तम्यै० रं परायै नमः। रं प्रपरा-  
 यै नमः। उं परापरायै नमः। ह्योः सदाशिवाय महाप्रेतपद्मायना-  
 नमः। इति पीठं प्रष्टुद्वयं प्रेतासनोपरि मूले नम्या नोत्तमं मूर्तिवि-

प्र३



सुत्र ३५

१५

द्रा  
८

१५

विनयतः यथावीर वडा मणो ॥ अथ यथा न ॥ प्रकु वीत है परमेशी माकरा  
 लवद नां बोरं मुक्त के शी च उज्जुनां ॥ बा मुडां दधि एां दिमां मुं ड मा ला वि  
 जितां म् सधः कि नाशि रः खड्ग नामा धो ॥ अः क रं कुनां ॥ अथ नर दं के व  
 दधि एा धो अ पाणि ॥ म माघोर प्र जां शी मी रं पी र्णा मां दिग्र स्त्रां मुं ड क्त  
 जि तां ॥ कं ठा व स क्त मुं डाली ग ल दुधिर व र्चिता म् ॥ कं एा व तं स प त्रा खिति १५  
 श न यु म ज पान कां ॥ घोर दं प्रो क रा जां व पी नो मी तै प जो अ रं ॥ श ना नां  
 कर सं द्या ते क्त कां वी र त स म्पु र्वा म् ॥ स क्त द य ग ल क्त धा रा नि स्फुरि  
 ता न नां ॥ घोर रूपां म हा रौ र्मु शा ना ल य वा सि नी म् ॥ र म शा न र्मो म हा रू द्रो म  
 हा लो क्ती दि गं न रः ॥ क पी क र कां वा मे म् लं ख द्वा ग द धि र्णो ॥ अ जं ग रू पि  
 तां गो पि न र्म स्त्रि मा ल मं डि तः ॥ जूल ला व क्त म ध्म र्मो ज स्म श य्वा अ व र्णि  
 तः ॥ वि प रि त म्रै पु नां त न्ना कालि कां रु द यो प रि जे यं स्वा मी दो दो ष्यं व तो क्त

वारे प स्वरं ॥ ए वं ज न्ता य जे दे धी वि स र्व सि धि प्र जा य ते ॥ इति यं त्र म ध्मे मूर्ति रं  
 वि स-प्रा म्ना नं काम क ला रू पं वि शा न्य क र क ष्णि क या पु ष्पा दि कं ग र्हा  
 चा म्हा ला धा रा लं ड ली नी ब्रं ह्म रं ध्र प जे न शि र स्त्रां वि शा व त त्रा म्हा म्हा  
 लो ली न्ता तां रु द य स्त्रा ष्ट द ल र क्त पं जे स मा नी य क्त र्ज व स्त्रा का रं ध्मा ला  
 मा न र्मे रू प वा रै सं प र्ण पु नः कु ड लि नी रूपां तां प मि वा यु बी ने वा म ना सि क ति ५  
 पा क र म्प पु ष्पे स मा रो ष्म म् लं म हा प ध्र व नां त स्त्रे का र एा नं द वि ग्र हे ॥ स र्व न्ना  
 त हि ते मा त रे ह्ये दि पर मे म्भ रि ॥ दे वे शी ज क्ति सु ल जे प रि वार स म न्नि ते ॥ पा व  
 त् वां प्क ज वि ष्मा मि ता व दे बी स्त्रि रा ज वा इति मंत्र न प ठ न् पु ष्पं क्त म्पू  
 तौ नि धा य-प्रा वा हा न मु ड्ग मा मु लं ॥ म हा काल स हि ते द धि र्ण कालि के र्  
 ता ग र्हा ह ला वा ह्य म् ॥ इति ष्ट ति ष्ट ति सं स्त्रा प्प म् लं म हा र त सं नि

ति ५



जेहि मं. इ ह सन्निधमस्वर मूलं म इ ह संमुखी ज र मूलं म. अ व धु म  
 ता ज व र दे वी धं उ ग न्या सं क चा स क ली कृ ता ज व र मूलं म ता. अ म त  
 कृ ता ज व र मूलं म ता. ज र मी कृ ता ज व र इति तत्तमु द्रां द र्श पृ वो त्त प्रा ए  
 प्रतिष्ठा मंत्रे लेलि ता मु द्रा या दे वी रु द ये प्रा णा न् प्रतिष्ठा प्य त त श्री जैः  
 जो नी जू ति नी नी ना मु र ना शि नी दान व द्ध नी सि व्या र्वा ले लि ता मु द्राः प्र द  
 श जे दि ति जै र व तं त्रो दो नी र्वा कुं कुं मुं ड व रा जी ती प र जो नि मु द्राः प्र द श जे दि  
 ति का ली रु द य मं तां अ त त त्स्या ने ता स्ताः शक्तिं जि जा व जे त। तथा. तत्रा  
 ए वे। सोऽनुः पूर्व पूर्व जा गं प्र दि ष्ठ स व्य जा गं द क्षि एं बी ग म होः द क्षि मं वि द्या  
 दु त रं जा ग म्प्यं प्र शा व द्धिः प त्ति मं जा ग मु क्त म्॥ इ त्या दि री त्या दि क ल्प नं क  
 वा पृ त जे त॥ त तो मूलं उ र्वा य मि ता का ल स हि ते द क्षि ए का लि के सा यु धे र

श्री २  
 परि वारे मा त स्त ता इ ति वि शे षा ध्या मि ते न त्रिः स क द्या सं त र्प्य मूलं म ता क ल स हि ता  
 ये श्री द क्षि ए का लि का पा दु का ये अ ध्वं प रि क ल्प या मि स्वा हा इ त्या त दि री त्या प्रा  
 ची नै रु प वा राः क ल्पि ताः त त पृ च क म ता का ल पृ त न त मं ना श शान व जं  
 जि तां सुं द री पृ ता यां तथा द र्श ना त स्त लं श्री द क्षि ए का लि का पा दु कां त प्य  
 या मि न मः इति त न्मुख क म ले सं त र्प्य मूलं श्री द. प्रा स नं प रि क ल्प या मि न म  
 मः इति वा मे धु षो दि कं द चा प द्य मु द्रां प्र द र्श म् ० द. क स्या ग तं त न मु द्रां प्र द  
 र्श म्. श्री द. के कु श लं इति त न्मु द्रां व प्र द र्श म् लं श्री द क्षि ए का लि का पा दु का  
 का ये अ ध्वं क ल्प या मि स्वा हा इति त न्मूलं शि सि किं वि द्वा त न्मु द्रां प्र द र्श म् लं श्री  
 द क्षि ए का लि का श्री पा दु का ये पा द्यं प रि क ल्प या मि न मः इति त स्मा त्र ज लं  
 किं वि द्या द यो र्द वा त न्मु द्रां प्र द र्श म्. श्री द. ये प्रा य म नी यं प रि क ल्प या मि  
 न मः इति त न्मूलं किं वि न्मुखे द वा त न्मु द्रां प्र द र्श म् लं श्री द. म धु प र्क प रि क ल्प  
 स्य धा इति त न्मुखे द वा त न्मु द्रां प्र द र्श म् लं श्री द. व द वा व म नी यं द वा मूलं श्री द क्षि



नै  
 स्तुतं परिकल्पयामि नमः इति च वाग्वादिनिमुद्रा जलैश्च स्नायामि वातमुद्रा प्रद  
 र्पः अंगं सं प्रोक्ष्य पुनः रावमनायं दवा मृत् श्री द वाससि परिकल्पयामि नमः  
 ॥ इति तन्मुद्रा प्रद र्पस्तुलं श्री द वाससि परिकल्पयामि नमः ॥ इति तन्मुद्रा प्र  
 द र्पस्तुलं श्री द वाससि परिकल्पयामि नमः इति गंधं निवेद्य तन्मुद्रा प्र र्पस्तुलं  
 पुष्पं परिकल्पयामि योषट् इति पुष्पं द वातमुद्रा प्रद र्पस्तुलं नैव रूप दीपने  
 ७  
 नेद्यादि दवा देवी दक्षिणे च प्रवर्णकं विभ्रतं दंडं स्व द्वांगं दंष्ट्रा जीम मुखं शि  
 व्याद्य वसवित कटि तुंदिलं रक्त वाससं त्रिनेत्रं मूर्ध्नि केशं व मुंडं माला विभूषि  
 तां जटा चारल स चंद्र खंडं मुच्यं जलं निव इति ध्यात्वा तुं स्फोटं पांशं लां कां क्रौं  
 म हा काल जैर की व स र्ग विद्या ना राय ना राय शी श्री फट् स्वाहा इति मंत्रेण पा  
 यः श्री हनुमदाय नमः दवा तपयेत् तदुक्तं देव्यास्तु दक्षिणे जाते म हा कालं प्र  
 कृतयेत् इति अत्र कल्पितं दिगनु स्तारेण नाय व्यादि शय र्गं तं गुरु पंक्तिं

प्रकृतयेत् ॥ तत्र तेरतः मणिं वर रुपाः स्वयं कृताः पंक्तं विष्ट र स्थाः सर्व वसा  
 ल ब न योग निष्ठाः प्रा प्राप्ति लैश्वर्य गुणै कायाः इति ध्यात्वा ला पूजयेत् ॥ उमि  
 हा दे वा श्री जा दु कां पूजयामि तप्ययामि नमः ॥ उम हा दे वा नंद नाथ श्री पा  
 त्रिपुरां वा श्री पा उजैर वा नंद नाथ श्री पा इति देव्योष्टः ॥ उं अं स्म नंद ना  
 थ श्री पा पूर्या नंद नाथ श्री पा उं वल वित्त नंद नाथ श्री पा वल वला वलानं  
 कुमार नंद ना श्री ध्या नंद ना वर दानंद ना स्म दी पा नंद ना मा यो नो मा य  
 व सं वा ॥ इति सिद्धोष्टः विमलानंद नाथ कुशलानंद नाथ जीम ले नानंद  
 नाथ सुधा कारानंद नाथ उं मी ना नंद नाथ गोर धानंद नाथ जोज देवानंद  
 नाथ प्रजापत्यानंद नाथ उं मूल देवानंद नाथ रति देवानंद नाथ विद्वेश  
 रानंद नाथ कृता शनानंद नाथ उं संतोषानंद नाथ सम पां नानंद ॥ इति मा  
 न वीष्टः मान वीष्ट स मी पेष्ट योक्तं मंत्रेण स्व गुरुं स्तुत्य संतप्य ततः

७

वि  
 ५५  
 १८



१८

कोलम ध्येनुषारसकटिक शामनौल कच्छा रुधि एगर्धिनः वरदा जयधारि  
 एणः प्रधानतनवः स्त्रियः ॥ प्रगौ तु क्रां ह द या य न मः ॥ सुर य शक्ति श्री पादु  
 कां ईशे उं क्रीं सिं शिरसे स्या हाशिरः शक्ति नेरतो उं कूं शिषाय वषट् शिषाश  
 वापौ उं क्रीं क व वायुं क व व श देवता पुरतः क्रीं नेत्रत्रयाय व्रौणट् नेत्रश  
 उं क्रीः ॥ य स्त्रो पौ ट् ॥ प्र स्या शक्ति श्री वरुदिभु मू ॥ प्रजिष्ठ सिद्धि मे देहि शरणा  
 गत व स ले ॥ न त्वा समप्य मेतु अप्य य मा व र्णा र्चनं ॥ इति देव्या ह स्तोत्रा मा न्या  
 चोदिके न प्रमा वर ए पू जानि वेद्य देव्यां ह स्तो पुष्पां जलि द द्यात् ॥ ततः पं व द  
 शको लोषु काल्यादि शक्ति पू जयेत् ॥ तत्र स र्व श्या मा प्रसि क्ता मुंड मा ला वि  
 नू मणीः ॥ त ज्ञानं वा म ह स्तो न धार दे स्य स स्मिता इति ध्यात्वा ॥ बा ह्यतः प्र  
 य मत्रि को लो स्या द्यादि प्रा दक्षि ण्ये ना उं क्रीं का सिं ली श्री पादु कां पू जयामित

१८

प्ययामितमः ॥ उं क्रीं क पाणिनी श्री पा ॥ उं कूं कु क्षा श्री पादु ॥ द्यो ती यत्रि को लो उं क्रीं  
 कुरु कु क्षा श्री पा ॥ उं मिं विरोधिनी श्री पा ॥ उं विं विप्रवि ता श्री पा ॥ २ ती यत्रि को  
 लो उं उं उ ग्रा श्री पा ॥ उं उं उ ग्रा श्री पा ॥ उं दी दी द्या श्री पा ॥ व नु र्धं उं नी नी ला  
 श्री पा ॥ उं धं ध ना श्री ॥ उं वं व ला का श्री ॥ पं व मे उं मा मा त्रा श्री पा ॥ उं मुं मु द्रा  
 श्री पा ॥ उं मिं मि ता श्री ॥ मू लं ॥ प्र जा ॥ द्यो ती या व र्णा र्चि नी इति देवी पा द प्रो  
 ॥ पुष्पं द द्यात् ॥ त तोष्ठा द लेषु स्या द्यादि प्रा दक्षि ण्ये ना वं ह्मा णी हं रु मा रु  
 ठां स्वर्य व र्णां व र्नुं र्नुं जां व नु र्धं क्रां त्रि ते जां व वं ह्म क र्त्तुं व पं क जं ॥ दं उं प द्या  
 भो स्र त्रं व द धा ती वा रु ता नी ॥ ज टा जू ट धा रं दे धी जा व पे स्या ध को त मः ॥ प्र  
 द्यां ह्मां श्री पा ॥ नारा णी म हा दी प्रो श्या मां ग रु ड या नी ॥ ना ना लं नार सं यु तां वा  
 के शी व र्नुं र्नुं जां ॥ वं टां शं खं क पा लं व क्रीं सें द ध ती म रां म धु म तां म दो धी

१८



लो द्रष्टु स न गिरुं द श ई नारा ली श्री पा मा हे मरी व पा रु ठां मु त्तो त्रि न य  
 नान्नि तां क पा लं वै र्द वै व ड म रुं वै व व र द न य म ल कं टं कं व द ध तौ द व  
 ना ना न र ए त्त जि तां। पु मा हे मरी श्री पा दु। वा मुं डं वं द सा स प्र ग टि त द श  
 नां। जाम व क्रां त्रि ने त्रां। नी लां नो जे प्र ता र्थी जं प्र मु वे पु कौ नार मुं डालि मा  
 जां। ख क्क म लं क पा ल न र शि र द्वा टि तं र ने ट कं धार ती प्रे ता रु ठां प्र म तां म धु म  
 म मु दि तां जा व पे डं वं ड रु पां र्द वा मुं डं श्री पा कौ मा री कं कु मा नां व त्रि ने त्रां  
 शि वि स्थि तां। व तु र्जुं शक्ति पा शा व कं शा न य धा र्णी। ना ना लं कार सं यु क्त  
 प्र म तां परि वि त ये त्। एं कौ मा री श्री पा अप र ज्जि ता व पी ता जाम धो र्त्त  
 व र प्र दां क म लं मा तु लि गं व द ध तौ प री वि त ये त्। एं अप र ज्जि ता श्री पा

१८

दि पुटे

१८

वारा णी म्र व र्ण नां व रा ह व द नां मु जां॥ फ ल कं र य द्रु मु श लं ह लं वे द नु जौ धा तां  
 ॥ श्रीं वारा णी श्री पा दु कां पू ज या मि त। नार सिं ही नृ सिं ह स्य वि चि ती स द शं व  
 पु॥ नृ सिं ह ध्या नं य धा शा र द्वा ति ल के। मा लि क्पा द्रि स म प्र जं नि ज रु वा स  
 त्र सार भो ग एं ज्ञा नु न्य सा क्क सं बु जं त्रि न य नं र न्नो ध्न स द्रु ष र्णी॥ बा हु ध्या  
 ध स शं र व व क्क म ति शं दं ध्रो ध्र व क्को ध्न स द्वा ला जि ह्म मु द य के श नि व यं वं  
 दे नृ सिं हं वि चं॥ आः नार सिं ही श्री पा मू लं प्र ता ष्ठ सिं धि॥ नृ ती या व र्ण वि  
 ने। इ ति दे वा पा द योः पु ष्पं द द्या त॥ ततः पा त्र ग्रे षु त्रि पु रा सा र स मु च यो द ध तौ  
 ज्ञ न पुं ज नी ल व र्ण नि रु र वे ता ल क पा ल म ल दं डा न॥ ल हं डं धु जि सं मु तां स्त्रि  
 ने त्रां नृ क रं दं डैः क रि ह सा दं ड वं डे। ग ज क्क नि व त्ति तो त री या न नृ कु टी सं द  
 टि ते ध्वा टि प दे। ज लि ता लि कु ला न कं त ला ग्रा न मु दि तां तः॥ का रा न रु  
 धौ व ना म्हा ज्ञा न॥



इति ध्यावा स्वाग्रदि प्रादक्षिण्येन जत्राग्रेषु फलये त्वा ऐं ह्रीं प्रसि तांग जैर वा  
 य श्री पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री  
 पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री  
 श्री पा. ॥ ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री पा. ऐं ह्रीं रु रु जैर व श्री पा. ॥ प्र श्री रु रु  
 नु चानि एणि वनि। इति श्री देवी वर एणोः पुष्पं दद्यात् ॥ तं त्रां ती त रे नु  
 जैर वां व म हा सि हं प्र श्री मादिकां व वां ॥ उ म त जैर जी प म्मा द शी कर ए  
 जैर जी प त्रा ग्रेषु ॥ ज पे मं त्री मो ह नार वां व जैर वां त्री त्री धा त्री धा धा  
 प ने ह दे छी ता रक्त म म्मा तं नु लै प ते। इति स्म र ह्यादि त त व नु र स्म  
 स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन दक्षिण्येन न त तदि ध्यादि वा लं रुं द्र श्री पा. ऐं ह्रीं  
 प्र श्री श्री पा. ऐं य म श्री पा. ऐं नै र मे ष ति श्री पा. वं ज रु ए श्री पा. यं वा

२०

२०

पु. संतो म. १ तं र शान श्री. इ त्रेशान ये मि ध्ये प्रां प्र तंत. नै र त व रु ए जै म्मि  
 ध्ये वं ह्रीं श्री. म्म लं प्र श्री. पं व मा व रु ए व नि ॥ इति देवी पाद यो पुष्पं दद्यात्  
 ॥ द क्षति वं व ज्री श्री. शं शक्ति श्री पा. दं द ड श्री पा. खं ख ड श्री पा. पं पा शं  
 प्रं प्रं कु श गं ग श्री. उं मं म ल श्री. उं जं प म श्री. उं वं व क. म्म लं प्र  
 जी ष ष म्मा व र ए व नि। पीत मु क्ता स्त्रिता का श वि षु द्र क्त सिताः ॥ को क  
 न द पा २ ला जा व व श्रा वाः पीरि किं ताः ॥ ततो दे व स्त्राणि फलये त्वा मे  
 ध्ये ह स्तो र व ड श्री पा. द धी धः त श्री द धो मुं ड श्री. द धी धः प्र ज श्री प श्री ॥  
 द धी धे व र द. इति सं पृ ष्ठ ध र म्म त द जा वे नि शे षा र्म र्म द्र वं श्री शु धा ॥  
 दि स तं दे वे नि ने धी धा पु न्दु वी सं पृ ष्ठ सं त प्य पु न प्रो न्या दि मु द्राः  
 प्र द र्प म हा का ल मंत्र मु द्रा र्प म हा का ल श्री पा. इति देवी दक्षिणे म हा ॥



२१

कां त्रिसंस्तुतां तत्पुत्रं नमोऽर्पयतिः पूजयेत् ॥ यथास्तु लोचनं च दृष्टे  
 रभ्यपरिपूर्यति गं बरो ॥ गृहाण परमं गं धं कृपया परमेश्वरि ॥ सांगाणे  
 सपरिवारायै दक्षिणा कालिका पादुकायै गं धं क्षमं परिकल्पयामि ॥  
 नमः ॥ इति गंधदानमुद्रा गंधं दत्वा तन्मुद्रां प्रदर्शयामि ॥ तुरीये  
 वनसंस्तुतं नानागुणं मम नोदरं ॥ प्रमंदशोरं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमं ॥  
 सांगां पुष्पाणि वीजानि ॥ इति पुष्पदानमुद्रा पुष्पं दत्वा तन्मुद्रां प्रदर्शयामि ॥  
 तोयपपात्रं पार्श्वे प्रोक्ष्य नम इति पुष्पं दत्वा वामतर्ज्ज्या स्पृशन्मूलं  
 वनस्पतिरसोदिव्यो गंधाय सुमनोदरः ॥ प्राद्वेपः सर्वदेवानां पूज्योयं प्रति  
 गृह्यतां ॥ सांगां धूपं परिकल्पयामि नमः ॥ इति शंखमुसज्य धूपमुद्रां प्र  
 दर्शयति गंधानि मंत्रमातः स्वाहा इति गंधं ध्यादिजि संस्तुत्य वामहस्तौ वादयेत् ॥

२२

न१

न देवतागुणादिर्किं कीर्तयन् नीवेदे नीधूपयेत् ॥ पात्रं देवी वामे स्थाप  
 येत् ॥ ततो दीपपात्रं पट्टं इति प्रोक्ष्य नमः इति पुष्पं दत्वा वाममध्यम  
 प्रास्पृशन्मूलं सुप्रकाशमहा दीपः सर्वत्र तिमिराघटः ॥ स बाह्याभ्यं  
 तरं ज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यतां ॥ सांगां दीपं परिकल्पयामि नमः ॥ इति शं  
 खत्रयमुसज्य तन्मुद्रां प्रदर्शयामि ॥ ततः पुष्पां ६ त्रलिं देवां देव्यै वतुरस्यं मंडलं स्था  
 प्याच्छि त्रले न निम्नायि संस्तुत्य तत्र स्नायारं स्नाने वेद्यं पात्रं निधाय नै  
 वेद्यं कीर्तयति इति मंत्रेण प्रोक्ष्य वक्त्रमुद्रां प्रदर्शयामि ॥ प्रति नायु नीजे  
 द्वे मध्यो मुखं वामकरेण सप्त ध्यात्वा तत्र तदुदरं संशोष्य रमिति स  
 प्तवारं त्रपन् प्रधोमुखं दक्षकरेण तदुदरं दोषान् संदह्य प्रधोमुखं



वामकरेण वज्रितीर्णजेन सप्तवारमजिमं त्रैलोक्यं दमृति कस्य मूले न प्रो  
 धमः प्रमृतात्मकं ध्यात्वा तै तत्स्य ध्या मूलमष्ट ध्या त्रया ध्ये नुमुद्रां प्रद  
 र्पतिं ध्यादितिरिभ्य र्तिमुखा तै जौ निर्गतमिति ध्यात्वा पात्रांतरे जलम  
 मृती कस्य नामांगुष्ठे न नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिण करे जलं गृहीत्वा मू  
 लं। सप्तात्रसिद्धिं ध्यं सुह विविध ध्याने क ज ध्यात्वा निवेद्य पामि देवेशि  
 नुगाये नृणां एतदिति व श्लोकं ज प्लासांगां नैवेद्यं परिकल्पयामि नमः  
 इति जलमुत्सृज्य मुद्रां प्रदशयेत्। उ प्रमृ तो पसरण मसि स्यात् ॥ इति  
 देव्या ह स्ते जलं दद्यात् ततो वाम करेण विक्र बोधलस २ शी ग्रासमु  
 द्रां प्रदश्य समंत्रकं प्राणादिमुद्राः प्रदशयेत् ॥ उ प्राणा यस्या हा ॥ उ प्र  
 णा ना यस्या हा ॥ उ व्या ना यस्या हा ॥ उ उ द ना यस्या हा ॥ उ स मा ना यस्या हा

ततः मूलं श्री श्री दक्षिण काष्ठ लि के नमस्तो देव देशि स र्च च सिकरं प  
 रं प्र न्या निवेदितं मुद्रं प्र कृति स्मं सुशी तलं प्रमृ ता नंद संप्र एंगि हा ए  
 जलमुत्तमं इति जलनि वेद्यपात्रं ज वनिक या जो ज न स्य ली संवेद्य ततो  
 ब्र ह्मेशा यै रजितः स्त तां देव क माजिः सु धं मु वां मरैः परि वी ध्यं ज्य  
 मा ना नम्र ५ की डा प्र ह स ना य रां पंक्ति जो तग एा न हा स य ती जु जा  
 नां म हा दे वी ध्यायेत् ॥ प्र त्रा व स रे पू जां ग हो मं अ यति ॥ तत्र प्रान्म दक्षि  
 ए तं ह स्ता प्र मा एं व नुर र्खं व नुरं ७ ल मु छितं स्पं डिलं क ला मू ले न वी ध्या  
 फ २ इति प्रो क्ष्य ते नै व द जैः सं ता ड्य हु मिति मु छि ना सिं वा मू ले नाग्नि स्था  
 पयि ता तत्र दे वी ध्या ता गं ध्या ध्यैः संप्र ज्य प्रान्मे व्या सति हो मं क ला मू ले  
 न पं व वि शति सं प्र रज्य पा हु ला पु र्न व्या जि हु ला गं ध्या ध्यैः संप्र ज्य दे व तां  
 पीठ मू तै सं यो ज्य व ह्नि वि स कृ पे त ॥ जो जो व ह्ने म तै हो शं सर्व क म प्र







१५

हं फट् स्वाहा ॥ उहं महाकाल रमशा न नाभिपद्मं सामिजानं बलिगुरु  
 गृह्णापपर विघ्ननिवारणं कुरु सिद्धि मे प्रयच्छ स्वाहा एव बलिर्महाका  
 लायनमः ॥ इति महाकाल बलिदत्तं तस्य प्रो देवी व्याख्याने नुमुद्रया ज  
 लममृति कृत्वा मृतापिधानमिहिसि स्वाहा इति देव्या हो स्ते जल दद्यात् ॥  
 तथा प्राणेशि तं विज्ञात्वा नैवेद्यं नैरस्यो संस्थाप्य हस्तप्रक्षालनं दिक्का  
 रिचा मूलं श्री दक्षिण कालिके तमालदल कर्पूर पूगभोजनं रंजितं संशो  
 धितं सुगंधं वप तां मूलं प्रतिगृह्यतां ॥ इति वमुद्रया निवेद्या ततः साष्टद  
 लं गोधूममिष्टादिरविदिपसहितं स्वर्णादिरवित मारात्रिक पात्र मा दायव  
 ने नुद्रो प्रदर्शयेत् नुमुद्रायाम्भित्ती कृत्य मूले नाभ्यर्च्य आमस्तकमुत्तोल्य  
 मूलं समस्त योगीजिनी वक्र परि वारगणावृते प्रारत्रिकं गृह्णात् एव का

१५

लि के ममसि ज्ञेये ॥ इत्यनेन मंत्रेण घंटावादनपूर्वकं पारवतचक्रमाकारमु  
 वैदेवीं निराजयेत् ॥ ततो देव्यै नुष्या जलित्वा कुमारसुवासनी वसं  
 त्य प्राणं दादिना संतोष्या प्रमगु सं संतर्प्य पात्रपात्र स्पृश्य मपि किं  
 वितस्त्रीकसंख्यादिन्यासपूर्वकं जपमालामानीय कवित्सा  
 त्रे वामहस्तेना स्थापयि चामूलं मंत्रेण द्योदके नाभ्युक्ष्य उज्जाले मया  
 माये सर्वसिद्धिं शक्तिं रूपिणि वतुर्वर्गस्त्रियं सस्तस्मा मे वंसि  
 द्विदाजवशतिगंधादि ॥ इत्यर्च्य उज्जं प्रविष्टुं कुरु माले चंड इति दक्ष  
 स्तेना दायशिरसि गुसंकेठे मंत्रं पीतवर्णं ह्रीं ह्रिं स्वे देवतां व्यापनरु  
 दयसमीपमालामानीय दक्षहस्तमभ्यपवर्णि संस्थाप्य तदेकाग्र  
 वितः महाकालमंत्रमष्टोत्तरशतं जप्य वा कुक्ष्ये कासे उमहासे



ॐ निर्वर्णं त्रानं जपि वा। महाकालं त्रयो यथा। ॐ श्रीं ह्रीं महाकाला  
 ह्रीं यमदेहादेवाय क्लीं कालिकायै ह्रीं। इति स ह स्रम षो तरशतीं वा मूला  
 मंत्रं प्र एवमु श्रियं यथाविधि जेत ॥ करमार्या लं वा ॥ ततः संस्कृ  
 रव्या पूर्यं पुनः चंमाले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा ममा शुभं कु  
 स पुमे जद्रे य शो वाये व सर्वदा ॥ श्रीसिद्धे नमः ॥ इति मालां स्वशिर  
 सि सं स्थाप्या पुनः सप्तादि करषडं ग न्या संविधाय प्राणायामत्रयं  
 कृत्वा प्रष्टोदकं गृहीत्वा देवायाम ह सो कं इति ह्रीं कृत पाणिना  
 जपं गृह्णाति गुह्यं गुह्यं गोप्री चं गृहाणा स्तत्कृतं जपं सिद्धिर्भवतु मे  
 देवी वल्लभा च यि स्थिते। इति समर्प्य देव्यै पुष्पं दत्वा श्रीसिद्धे नमः इति  
 मालां संस्तु ज्यर ह सि स्थापयेत्। ततः स्तोत्रपाठं क व व स ह स्रना

२५

२५

### साधा

नामादिकं पठित्वा प्रदक्षिणा नमस्कारान् विधाय विशेषा ध्यायितं  
 विधा विनश्यदं कं जागं गुरुं गुरुं रोर ना वे स्वशिरं सि स्थापय गुरु वेरा  
 त्त्ये प्राप्ते नेव संनिहि ते गुरो शक्त्ये गुरुवे प्राप्ते ने वेति क्रमेण वि  
 धिना पात्रे वंदनां कृत्वा कुला कुल जपं कृत्वा शांति स्तोत्रं पठित्वा  
 इतः पूर्व प्राणां बुद्धि देहि धर्म धि कार तो जाग्रद्व्य प्र सुषुप्ता  
 वस्था सुमनसा वा वा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्मा मुदरेण  
 शि श्याय स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं मस्तु स्वाहा  
 ॐ न दीपं मासकलं श्री दक्षिणा कालिकायै समर्पितं नृति सतः।  
 इत्यात्मनं जल सागे न देवी पदे समर्प्य विशेषा ध्यायितुं लो देवा



१६

हे

उपरि त्रिधामनि चासाधु वासाधु वा कर्मयद्यदाहरितं स या त स्मि  
 पयादे बी गृहा एण राध न धनं म म श्री ज्ञः श्री दक्षिण कालि का प राध  
 रयाधर्मः स्वाहा इस धर्मं द ला नै वा ध्या वशिष्ठे प्राप्ता नं सा म वधि का  
 अथोक्षपुनः पात्रं संस्थाप्य द्वार देवतादि सति न पिरि वार गणान्  
 देवा देवि लीला नै लीला जाय संसार मुद्रा मुद्रा मुद्रा मुद्रा परं स्थाने  
 स्थाप्य परमेष्ठिनि यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदं । शतित १६  
 तेजः निष्कल्पि पुष्पेण स मुद्रा सा ध्याय पुर कं यो जे ए न रुदय  
 प्राप्ती पुनः संपूज्य लाभ्यते स्थापयेत् । ततः ऐशान्यां जले नत्रिको  
 वत्त वतुर स्वं मं ५ दलं निष्कल्पितं त्रिंशेन संस्तुत तत्र उं वंदे शयै नमः ॥  
 शति तां गं धादि नि संपूज्य नैवेद्यं दद्यात् तां शं वा किं विदुः सत जाले